International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 220-221

परम्परा में नवीन मूल्यों का समावेश करने वाली शिवानी : एक अध्ययन

डॉ0 सुरसरि तरंग मिश्र
प्रवक्ता–हिन्दी, उ0प्र0 सैनिक स्कूल, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

शिवानी मात्र एक नारी नहीं; परम्परा की सार्थवाह हैं; उसकी एक सशक्त कड़ी हैं; पर ऐसी जो अतीत को वर्तमान से और वर्तमान को भावी से जोड़ती हैं। अतीत के रस–निर्झर में स्नात होकर वर्तमान की गंध को वितरित करते हुए शिवानी ने भावी पीढ़ी के लिए जिन अमृत–बिन्दुओं की साहित्यिक आंगन में वर्षा की है, वे उसके लेखन को प्रामाणिक भी बनाते है और विश्वसनीय भी। स्वातन्त्र्य पूर्व के भारत को उन्होंने जिया है, उस समाज के सभी परिवर्तनों, मूल्यों को बारीकी से परखा है और उस परिप्रेक्ष्य में स्वतन्त्र भारत का सजीव चित्र आंका है। उनका लेखन अनुभव सिद्ध लेखन है और उनकी प्रतिभा कहानियों के रूप में जीवन के कण बटोरती हुई गहरे और दीर्घ परिश्रम के साथ परिपक्व होकर उपन्यासों के प्रकाश में आते ही शिवानी जी हिन्दी साहित्य जगत का महत्वपूर्ण स्तम्भ बन गयीं। वर्तमान और अतीत दोनों को ही उनकी सृजन–प्रतिभा ने समेट लिया है। वस्तुतः वर्तमान को देखने के लिए ही उन्होंने अतीत की गांठे खोली हैं। शिवानी जी की लेखनी ने हिन्दी गद्य–साहित्य की विविध विधाओं का स्पर्श किया है और वे हर प्रकार की रचना में सफल हुई हैं।

उद्देश्य

शिवानी ने अपनी बहुआयामी प्रतिभा को विविध रूपों में रूपायित किया है। 'सर्वेक्षण कार्य' के द्वारा जहाँ उनके अदम्य कौतूहल, साहस, संवेदनशीलता और मानवीयता के दर्शन होते हैं, वहीं समचे–साहित्य के द्वारा उनके चरित्र की कोमल, सहजोत्फुल्ल चेतना का भी संस्पर्श होता है। उपन्यास सृजन उनकी रचनात्मक प्रतिभा का अनूठा आयाम है। जिसके द्वारा घटनाओं का संयोजन और उर्वर कल्पनाशीलता का अनोखा संयोजन हुआ है। इसी प्रकार जीवन के कण–कण से बटोरी जाने वाली अनुभूतियों पर पग–पग पर होने वाले अनुभवों का अंकन रेखाचित्रों और संस्मरणों के रूप में हुआ है। अतएव हिन्दी गद्य की सभी विधाएं शिवानी जी की लेखनी का सस्पर्श पाकर जीवन्त और स्पन्दनशील हो उठी हैं। उन्होंने पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर समाज के प्रगतिशील मूल्यों की स्थापना की है। उनकी रचनाएं विशेषतः सामाजिक उपन्यास वर्गगत–संघर्ष और शोषण एवं सामाजिक पुनरूत्थान के उद्देश्यों से परिपूर्ण हैं।

शिवानी ने मुख्य रूप से मध्यवर्गीय समाज की समस्याओं के अन्तर्वाह्य स्वरूप का यथार्थ परक चित्रण किया है। प्रेमचन्द और नगर के सामाजिक चिन्तन को नया आयाम देते हुए उन्होंने कथ्य और शिल्प दोनों दृष्टियों से युग–परिवेश के मध्य जीवन–मूल्यों का पूर्ण सजगता के साथ विश्लेषण किया है। प्रेमचन्द्र ने सामाजिक जीवन पद्धति का आदर्शवादी अंकन किया है। तत्कालीन युग में सामाजिक मर्यादाएं जन–जीवन को जकड़े हुए थीं, विद्रोहात्मक चेतना विवशतापूर्वक दब–घुट कर रह जाती थीं। प्रेमचन्द ने यद्यपि उस पीड़ा को स्वर दिया किन्तु त्याग और समर्पण के आदर्श के आगे क्रान्ति का विस्फोट न होने पाया। आगे आने वाले कथाकारों ने युग एवं वातावरण के बदलते परिवेश के अनुसार सामाजिक परम्पराओं एवं मानव की आन्तरिक वृत्तियों का खुला चित्रण किया। शिवानी ने किसी मनोविश्लेषणात्मक ग्रन्थि में न फंसकर सामाजिक सत्यों का स्वस्थ उद्घाटन किया। सामाजिक रूढ़ियों के प्रति विद्रोह एवं नये युग की मान्यताओं का समर्थन शिवानी–साहित्य में किया गया है।

यथार्थवादी धरातल पर सम्पूर्ण मानवतावाद की प्रतिष्ठा उन्हें प्रेमचन्द के सैद्धान्तिक दृष्टिकोण का अनुयायी बनाती है किन्तु प्रेमचन्द और शिवानी जी में भारतीय–स्वतन्त्रता की संक्रान्तिकालीन पीढ़ी का भेद है। व्यक्ति के अन्तर्मन में प्रवेश कर एक व्यापक चेतना, विशाल फलक और समन्वयकारी बौद्धिकता ने शिवानी को किसी भी प्रगतिशील आधुनिक कथाकार से पीछे नहीं रखा। उन्होंने नागरिक जीवन की जटिलताओं, विश्रंखलाओं और मानवीय विवशताओं का वैज्ञानिक निरूपण किया है। पीढ़ी के युग भेदानुसार शिवानी ने रूढ़ियों का विरोध और विकृतियों का चित्रण किया है। प्रेमचन्द ने जिन सदनों, आश्रमों को नारी की विवशताओं का समाधान बतलाया, उन्हीं आश्रमों में पनपने वाली विकृतियों का भंडाफोड़ नागर जी ने 'बूँद और समुद्र' और 'अमृत और विष' में किया। यहीं से परम्परानुसरण करते हुए शिवानी ने 'भैरवी' और 'चौदह फेरे' उपन्यासों में यही स्थिति चित्रित की है। वस्तुतः शिवानी ने नारी को समस्या नहीं बनाया, समाज के एक अनिवार्य अंग के रूप में, एक स्वतन्त्र इकाई के रूप में उसके अस्तित्व की सर्वत्र प्रतिष्ठा की है। 'कृष्णकली' की पन्ना, 'चौदह फेरे' की नन्दी, 'सुरंगमा' की लक्ष्मी, जैसी पात्राएं उनकी नारी भावना का प्रतिनिधित्व कराती है। शिवानी के सभी उपन्यासों में नारी जीवन के बहुतेरे स्वर खुलते हैं। यह बात निर्विवाद सत्य है कि इस रूढ़िगत और पुरूष–प्रधान समाज में स्त्री का व्यक्तित्व कुचला हुआ है। हमारे समाज में इस समय भी लाखों–करोड़ों औरतें ऐसी हैं, जो भयंकर से भयंकर परिस्थितियों में भी अपने भाग्य पर सन्तुष्ट रहती हैं और पति तथा समाज का अत्याचार चुपचाप सहती हैं। शिवानी ने ऐसे ही जीते–जागते नारी पात्र चुनकर हमारे सामने पेश किए हैं। 'कृष्णकली' में वेश्याओं की अन्तर्पीड़ा और विवशता मुखर है।

शिवानी की एक प्रमुख विशेषता यह है कि वे किसी वाद, दुराग्रहों एवं कुंठाओं से ग्रसित नहीं है। सामाजिक परम्पराओं के विरोध एवं समाधान के अतिरिक्त स्वातन्त्र्योत्तर भारतीय राजनीति के विकृत रूप को निर्भयतापूर्वक सामने रखा है। लोकतान्त्रिक शासन प्रणाली में पूँजीवादी षड्यन्त्र और सामान्य जनता का शोषण, नेताओं का सत्तामद पैने रूप में व्यंग्यात्मक शैली से प्रस्तुत किया है। लेखिका का जीवन–संबंधी दृष्टिकोण उनके साहित्य में व्यक्त हुआ है। प्रत्येक साहित्यकार का कुछ न कुछ उद्देश्य होता है। वह प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से उनकी रचना में निहित रहता है। साहित्यकार जीवन का पर्यवेक्षक नहीं, यह दार्शनिक भी होता है। जीवन में प्रति उसका दृष्टिकोण उसकी कृतियों के माध्यम से संसार के सामने आता है। शिवानी के कुछ उपन्यास निरूद्देश्य और कुछ उद्देश्यनिष्ठ हैं। 'श्मशान चम्पा', 'मायापुरी' और 'विषकन्या', आदि उपन्यासों में कोई उद्देश्य लक्षित नहीं होता है, केवल करूणा और सन्त्रास की निरूद्देश्य बनावट से किसी भी कथाकार को क्या हासिल हो सकता है? उसे जीवन के भीतर बैठकर, उत्तरदायी तथ्यों को

तलाशते हुए, उन्हें प्रभावशाली ढंग से रेखांकित करना चाहिए। लेकिन जो कथाकार खूबसूरत और रोमांचक 'प्लॉट' अद्भुत चरित्र सृष्टि, मधुर और कमनीय चित्रांकन को ही अपना लक्ष्य मान लेता है, शायद उसे इस 'बुनियादी बात पर ध्यान देने का अवसर नहीं मिलता। दुर्भाग्य से शिवानी के साथ उनके कुछ उपन्यासों में यही हुआ है। जहाँ तक उपन्यास में एक मोहक और आकर्षक संसार के निर्माण का प्रश्न है– शिवानी अत्यधिक सफल रही हैं।

शिवानी के उपन्यासों के दो मुख्य धरातल हैं। आज की महानगरीय चेतना के विभिन्न स्तरों को शिवानी ने परत–दर–परत खोला है और इस प्रकार प्याज के छिलके की तरह एक के बाद एक और दूसरी समस्याएं खुलती चली गयी हैं। नगर–जीवन की इन तमाम समस्याओं के केन्द्र हैं– कलकत्ता दिल्ली, कानपुर, लखनऊ, बम्बई और इलाहाबाद आदि। शिवानी प्रारम्भ से ही बहुत भ्रमणशील लेखिका रही हैं। और जिन–जिन नगरों से उनका परिचय हुआ है, उन–उन नगरों का एक वातावरण उनके उपन्यासों में कहीं न कहीं अवश्य चित्रित हुआ है। महानगरीय जीवन की घुटन सन्त्रस्त स्थितियाँ, प्रदूषण, भीड़–भड़क्का, शोर–गुल, गन्दी बस्तियाँ और सतमंजिली इमारतों आदि के चित्र विशेष रूप से उभरते चले गये हैं। उन सबके बीच अनेक स्त्री–पुरूषों के चेहरे एक दूसरे से टकराते हुए नजर आते हैं। इसके साथ–साथ स्त्री–पुरूषों के संबंधों और समस्याओं के रूप अंकित हुए हैं। नगर जीवन के बाद शिवानी के उपन्यासों में पहाड़ी जीवन का यथा–तथ्य रूप भी उजागर हुआ है। पहाड़ी लोगों के रहन–सहन, अशिक्षा रोग और अंधविश्वास आदि के चित्र इसके साथ जुड़े हुए हैं, लेकिन एक बात और भी है कि पहाड़ी जीवन का भोला रूप भी इन सबके बीच झांकता नजर आता है।

भारतीय समाज अपनी समस्त पीड़ा और उच्छवासों से शिवानी–साहित्य में कराह उठा है। जहाँ उन्होंने जीवन की यथार्थ वीभत्सता के निम्नतम स्तर का चित्र खींचा है वहीं वे उसके समाधान के नूतन परिवर्तन के आग्रह का सांस्कृतिक आधार भी प्रस्तुत करते हैं। आर्थिक स्वातन्त्र्य, रूढ़ियों के प्रति विद्रोह और बदलते संदर्भ, आयोजित और प्रेम विवाह, नारी समस्या, युवा आक्रोश शिक्षा और भाषा की समस्या, साम्प्रदायिकता आदि विभिन्न समस्याओं का सुलझा हुआ समाधान शिवानी ने अपने साहित्य द्वारा प्रस्तुत किया है। शिवानी–साहित्य में विभिन्न समस्याओं के साथ पुरातन मानवीय मूल्यों के पुनर्निधारण की ओर संकेत किया गया है। आज हमें अपनी रूढ़ियाँ बदलकर नये मानदण्ड स्थापित करने होंगे। वे न तो अत्यन्त प्राचीन होने चाहिए और न ही अत्याधुनिक। पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित जीवन मूल्य भी किस काम के, जो लोक लाज और कुल–मर्यादा को ताक पर ही रख दें? आज हमें मध्यम मार्ग को अपनाने की ही आवश्यकता है।

अभ्युदय और निःश्रेयस साधना के लिए भी न तो एकदम श्मशान में जाने की आवश्यकता है और न ही एकदम धर्म और आध्यात्म को भूल जाने की। प्रत्युत् एक मध्यम मार्ग निकालना चाहिए, जो गृहस्थ के लिए भी सरल हो। संक्षेप में यही शिवानी की मानव–मूल्यों एवं जीवन–दर्शन संबंधी मान्यता है। आज के वैज्ञानिक भौतिकवादी मानस में तर्क युक्त आनन्द की प्रतिष्ठा करने की कोशिश शिवानी जी ने सर्वत्र की है। शिवानी का समन्वयात्मक आदर्श यथार्थपरक है। यह आदर्श गांधीवाद के अहिंसा, सत्य, मानवतावाद का अखण्ड स्वरूप बनकर साम्यवाद में प्रतिच्छायित हुआ है। यथार्थ की विषमताओं से जूझकर मानव निराशा और पलायन की चरम सीमा में पहुँचकर भी मृत्यु का वरण नहीं करता, वरन् घोर अंधकार में प्रकाश किरण पा जाता है। यह कठोर जिजीविषा साहित्य की स्वस्थ दृष्टि बनकर विकीर्ण हुई है। यह यथार्थ अयथार्थ नहीं, असम्भाव्य भी नहीं, असत् पर सत्य की विजय का स्वाभाविक किन्तु भारतीय संस्कृति का पारस्परिक आदर्श रूप है। रूढ़ियों से उन्हें घृणा है, आधुनिकता के प्रति कोमली भाव किन्तु नये और पुराने का समन्वय करने का ही प्रयत्न सर्वत्र किया है। लेखिका इस ओर ध्यान आकृष्ट कराना चाहती है कि ''आज, समग्र संसार एक दुर्घट समय से गुजर रहा है, प्रत्येक की अपनी निजी समस्याएं हैं, कई मोहक आश्वासनों से वह बार–बार छला जा चुका है और पूर्ण रूप से मोहभंग की स्थिति में पहुँच चुका है, किन्तु भले ही कुछ सुनने का धैर्य, उसमें न रहा हो, दीर्घ उपदेशात्मक भाषणों के प्रति उसकी अरूचि उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है। अभी भी अच्छी बातें सुनने वालों का अभाव नहीं है, और उसमें संवाद की स्थिति, निश्चय ही बनाई जा सकती है। बशर्ते आप में कडुवे सत्य को उगलने का साहस हो।'' इस प्रकार सत्य के ज्वलंत प्रकाश में शिवानी जी ने जो भी कुछ लिखा है वह अन्त तक सतत् प्रवहमान और सक्रिय रहा है।

उपसंहार

कई बार ऐसा प्रतीत होने लगता है कि यह व्यापकता अव्यावहारिक बन गयी है। उनके समकालीन साहित्यकार प्रायः किसी न किसी प्रचलित वाद के धरातल से बंधे हैं। कुछ प्रगतिवादी है तो कुछ साम्यवादी, कुछ समाजवादी हैं तो तो कुछ मनोविश्लेषणवादी। शिवानी की समकालीन साहित्यकारों में मन्नू भण्डारी ने मध्यवर्गीय समाज की कुंठाओं, आकांक्षाओं को चित्रित किया है। मन्नू भण्डारी की भांति प्रगतिशील विचारों की समर्थक होते हुए भी शिवानी–साहित्य अपेक्षाकृत विविध धरातल पर चित्रित है। यशपाल और नागार्जुन में विचारों का पैनापन, उद्देश्य की सक्षमता एवं तीव्र सम्प्रेषणीयता के बावजूद मार्क्सवादी चिन्तनधारा का प्राधान्य है। किन्तु शिवानी समस्त संवेदनशीलता और पैने व्यंग्य के साथ किसी विशिष्ट चिन्तन धारा से होकर नही ं लिखते वरन् उनका जीवन दर्शन प्रखर यथार्थ चेतना से मंडित प्रेमचन्द के उदात्त मानवतावाद का समर्थन करता है। शिवानी का साहित्य लखनऊ की पृष्ठ भूमि पर आधारित है किन्तु उन्हे आंचलिक कथाकार नही कहा जा सकता। उन्होंने समस्त भारतीय समाज के सामान्य जीवन का चित्रण किया है।

संदर्भ

1. साहित्य शास्त्र – डॉ0 रामकुमार वर्मा
2. शिवानी का हिन्दी साहित्य, सामाजिक परिप्रेक्ष्य में– डॉ ज्योत्सना शर्मा
3. भारतीय सौंदर्य शास्त्र की भूमिका– डॉ0 नगेन्द्र
4. छायावादी कवियों का सौन्दर्य विधान– डॉ सूर्य प्रसाद दीक्षित
5. साहित्य अनुसंधान के प्रतिमान – डॉ0 देवराज
6. नया साहित्य नये प्रश्न– नन्द दुलारे बाजपेयी